व्यवहार न्यायालय के तत्वावधान में "सदानीरा" के सौजन्य से राष्ट्रीय एकता एवं साम्प्रदायिक सौहार्द पर आयोजित

कवि सम्मेलन मुशायरा

१५ अगस्त १९९५

—: स्मारिका :—

सम्पादक मंडल

दिनेश भ्रमर, शकील अहमद मोईन

गोविन्दा बेराइटी स्टोर

बगहा स्टेशन, चौक

'अमरदीप'

प्रतिष्ठित फैन्सी वस्त्र प्रतिष्ठान

बगहा बाजार

रासायनिक खाद भंडार

उन्नत कृषि प्रसाधन का एकमात्र प्रतिष्ठान

बगहा

गुप्ता एन्ड सन्स

बगहा स्टेशन चौक, बगहा

बगहा हार्डवेयर

कचहरी रोड स्टेशन चौक, बगहा

मनोज मेडिकल स्टोर्स

एकमात्र प्रामाणिक औषधि प्रतिष्ठान

बगहा

हिन्दुस्तान ट्रेडर्स

बगहा बाजार, बगहा

श्री दुर्गा ज्वेलर्स

मे० नरसिंह स्वर्णकार

बगहा

संदेश

मुझे यह जानकर अपार हर्ष हुआ कि व्यवहार न्यायालय बगहा के तत्वावधान में राष्ट्रीय एकता एवं सौहार्द पर एक कवि सम्मेलन एवं मोशायरे का आयोजन ''सदानीरा'' के सौजन्य से किया जा रहा है एवं इस अवसर पर एक स्मारिका भी प्रकाशनीय है। निःसन्देह वर्त्तमान परिवेश में राष्ट्रीय एकता एवं साम्प्रदायिक सौहार्द राष्ट्र एवं समाज के लिए अत्यन्त आवश्यक है। मैं भी यह समझता हूँ कि आज की सबसे महत्वपूर्ण एवं ज्वलन्त समस्या राष्ट्रीय एकता ही है जिसके विषय में सोचना प्रत्येक नागरिक का परप कर्त्तव्य है। मेरी तमामतर शुभकामनाएँ इस सन्दर्भ में स्वीकार करें।

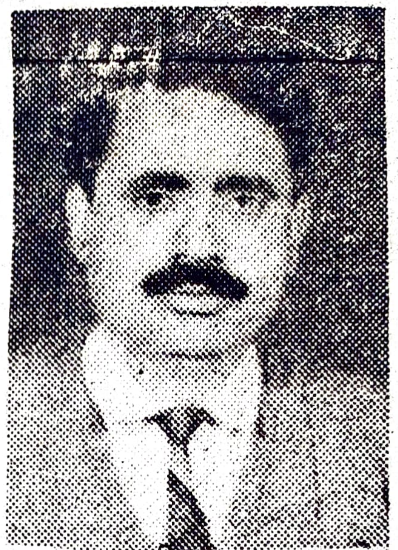
ह० चिरंजीसिंह

जिला एवं सत्र न्यायाधीश
पश्चिम चंपारण, बेतिया

राष्ट्रीय एकता एवं साम्प्रदायिक सौहार्द



दिनेश भ्रमर



शकील अहमद मोइन

सम्पादकीय

साहित्य सृजन के लिए ये आवश्यक है कि साहित्यकार को ऐसी पृष्ठभूमि एवं ऐसा वातावरण मिले जहाँ वह अपनी साहित्यक चेतना की घटित होने वाली घटनाओं के क्रम में परख सकें। मेरी दृष्टि में ये आवश्यक नहीं है कि उपरोक्त तथ्यों के आलोक में ही साहित्यकार की साहित्यक चेतना विकसित हो। ऐसा भी हो सकता है कि जहाँ साहित्यकार को सरस एवं सलिल वातावरण प्राप्त न हों तथा निर्जन एवं आशांत क्षेत्र में ही रह कर कुछ समझने एवं करने का अवसर मिले तो निःसंदेह वह एक अच्छी एवं बड़ी बात है।

बगहा अनुमंडल राज्य के पुराने अनुमंडलों के रूप में ही चर्चित नहीं बल्कि एक ओर प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर रेत, जंगल, पहाड़ एवं नदी को रखता हुआ दस्यु के सरदारों के आतंक एवं गन्ने की खेती से अधिक अपहरण के व्यवसाय के लिए भी जाना जाता है। ऐसे में इस क्षेत्र के साहित्यकारों एवं कवियों के द्वारा सृजनात्मक कार्य करना एक सेमिनार, कविसम्मेलन आयोजित करना निसंदेह कठिन कार्य है, परन्तु इस क्षेत्र के प्राकृतिक सौंदर्य ने ही जहाँ स्वर्गीय सच्चिदानंद हीरानन्द वात्स्यायन "अज्ञेय" को आकर्षित करते हुए "वत्सल निधि" के "साहित्यक

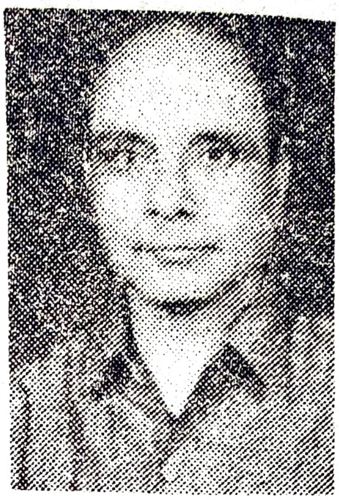
शिविर'' को देश के जानेमाने साहित्यकार एवं कवियों के साथ आयोजित करने के लिए उत्साहित किया वहीं इस सत्र की समाप्ति के पश्चात जो साहित्यक वातावरण तैयार हुआ उसे 'संभवाना एवं सदानीरा' के नाम से जाना एवं पहचाना गया। विगत दिनों से ये बात शोचनीय थी कि कुछ ऐसे कार्यक्रम आयोजित हों जो भय और आतंक से मुक्त होकर यहाँ के प्रबुद्ध नागरिकों को उत्साहित एवं आनन्दित होने का अवसर प्रदान करें।

ऐसे में जिला एवं सत्र न्यायाधीश महोदय श्री चिरंजी सिंह जी के संरक्षण एवं श्री सर्वेश्वर नाथ जी अपर मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी बगहा के मार्ग दर्शन एवं निरंतर सहयोग के पश्चात व्यवहार न्यायालय के तत्वावधान में 'सदानीरा' (साहित्य, संस्कृति एवं चेतना मंच) के द्वारा स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर 'राष्ट्रीय एकता एवं साम्प्रदायिक सौहार्द' के विषय पर एक कवि सम्मेलन एवं मुशायरा का आयोजन करने में हम सफल हों सके साथ ही इस स्मारिका का प्रकाशन भी श्री नाथ जी के मार्गदर्शन से सम्भव हो सका। हमें खेद है कि हम समय के अभाव एवं साहित्यकारों के अनुपलब्धता के कारण इस स्मारिका को वह रूप नहीं दे सके जैसा कि हम चाहते थे, परन्तु कम समय में ही इस स्मारिका को सुन्दर एवं आकर्षक बनाने का प्रयास निश्चित रूप से हमारे द्वारा किया गया है। हमें विश्वास है कि पाठक गण स्मारिका की अशुद्धि एवं त्रुटियों के लिए हमें क्षमा करेंगे। अन्त में श्री दीप नारायण सिंह अनु० पदाधिकारी एवं निबंधक श्री झा जी तथा आर० आर० सहाय स० आपूर्ति पदाधिकारी बगहा के बहुमूल्य सहयोग के लिए आभार प्रकट करना अपना धर्म समझते हैं।

दिनेश भ्रमर

शकील अहमद मोईन

राष्ट्रीय एकता एवं साम्प्रदायिक सौहार्द एक दृष्टि



सर्वेश्वरनाथ

किसी भी राष्ट्र की उन्नति एवं विकास के लिए यह आवश्यक है कि उस राष्ट्र का प्रत्येक नागरिक अपने मौलिक अधिकारों के साथ-साथ अपने कर्तव्य एवं दायित्व का निर्वाह करते हुए राष्ट्र के प्रति भी सदैव तत्पर एवं समर्पित रहें। केवल नागरिकों के समूह एवं क्षेत्रफल की बड़ी-बड़ी लकीरों से राष्ट्र का निर्माण नहीं होता है। राष्ट्र के प्रति समर्पण एवं राष्ट्रीयता की भावना ही किसी राष्ट्र को एकरुपता एवं शक्तिशाली बनाने में सहायक सिद्ध होती है।

भारत जैसे विशाल देश में भी जहाँ विभिन्न प्रकार की बोलियाँ विभिन्न प्रकार की संस्कृति विभिन्न प्रकार की जातियाँ विद्धमान हैं वहाँ यह आवश्यक है कि सभी धर्मों के लोग आपसी सौहार्द्ध के साथ-साथ राष्ट्र के प्रति उतने ही उत्तरदायी एवं सजग हों जितना की वह अपनी मोलिक आवश्यकताओं के लिए हैं। आपसी भाईचारा, एवं संस्कृति का दूसरी संस्कृति के आदान प्रदान ही निरंतर व्यवहार के पश्चात भाषा, जाति एवं धर्म से ऊपर उठकर सौहार्द्ध को जन्म देता है। और यही सौहार्द्ध राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता के लिए अति आवश्यक तत्त्व है। हम चाहे किसी भी भाषा, जाति एवं धर्म से सम्बन्ध रखते हों, लेकिन यह आवश्यक है कि भारतीय होने के नाते हम सब अनेकता में एकता के सिद्धान्त पर चलते हुए राष्ट्र के प्रति समर्पित रहें एवं भारत जैसे विशाल देश को विश्व के मानचित्र पर एक शक्तिशाली आदर्शवादी एवं महान राष्ट्र के रूप में प्रतिष्ठित करने के रूप में प्रयत्नशील रहें

सर्वेश्वरनाथ

अपर मुख्य न्यायिक दण्डाधिकारी-

बगहा

नयी गजल

आँख लिखती है, आँख पढ़ती है

चाँदनी रात की कसम तुमको
आज जाने न देंगे हम तुमको

रात यह नूर में नहायी है
भोर होने का है भरम तुमको

रूप जब इस तरह उजागर है
किसलिए लग रही शरम तुमको

चूड़ियाँ तोड़ रहीं खामोशी
चूड़ियाँ टूटने का गम तुमको

आँख लिखती है, आँख पढ़ती है
किसने दे दी है ये कलम तुमको

हल्का-हल्का है हर्फ काजल का
फिर भी पढ़ लेंगे साफ हम तुमको।

बे बनाये जो बात बन आये
रूठने देगी कब सनम तुमको

साफगोई गजल की किस्मत है
हाय, कब होगा ये इलम तुमको।

--गोपीवल्लभ सहाय

अमरनाथ एक स्मृति चित्र

याद आ रहे मुझको दृश्य वे सुहाने।
थकी-थकी आँखों में पाँव की थकानें॥

दूर-दूर दिखती हैं बर्फ की लकीरें,
ऊँचाई कहती है चल धीरे-धीरे,

मुग्धा हिम नदियों के पिघलते दहाने।
याद आ रहे मुझको दृश्य वे सुहाने॥

हिम-कन्या के नख-सी यह चंदनबाड़ी
चाँदी के बर्फ ओढ़ खड़ी है पहाड़ी

शिखरों पर किरन बुन रही ताने-बाने॥
याद आ रहे मुझको दृश्य वे सुहाने॥

हिमवती भुजाओं में बंधी हुई झीलें,
कहतीं, ओ यायावर, अंजुरी भर पी ले

बर्फ जहाँ कालीनें मेघ शामियाने।
याद आ रहे मुझको दृश्य वे सुहाने॥

--दिनेश भ्रमर

जाल फेंक रे मछेरे !

एक बार और जाल
फेंक रे मछेरे !
जाने किस मछली में
बन्धन की चाह हो !

सपनों की ओस
गूँथती कुश की नोक है
हर दर्पण में
उभरा एक दिवालोक है

रेत के घरौंदों में
सीप के बसेरे
इस अंधेर में
कैसे नेह का निबाह हो !

उनका मन आज हो गया
पुरइन पात है
भिंगो नहीं पाती
यह पूरी बरसात है

चंदा के इर्द-गिर्द
मेघों के घेरे
ऐसे में क्यों न
कोई मौसमी गुनाह हो !

गूँजती गुफाओं में
पिछली सौगंध है
हर चारे में
कोई चुम्बकीय गंध है

कैसे दे हंस
झील के अनन्त फेरे
पग-पग पर लहरें
जब बाँध रही छाँह हों !

कुंकम-सी निखरी कुछ
भोरहरी लाज है
बंसी की डोर
बहुत कांप रही आज है

यों ही न तोड़ अभी
बीन रे संपेरे !
जाने किस नागिन में
प्रीत का उछाह हो !

—डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र

गीतिका

सुबह से शाम तक बस आँधियां है।
तबी आसाम तक बस आँधियां है।।

घटा जल पोत तक मस्तूल पर है।
बुरे अंजाम तक बस आँधियां है।।

वो संसद है, कि मछुआरों की बस्ती।
लगे इल्जाम तक बस आँधियां है।।

एयर कंडिसनरों में छुप गये वो।
यहां आवाम तक बस आँधिया हैं।।

नहीं वो सुन सकेंगे देव वाणी।
अयोध्या धाम तक बस आँधियां है।।

मिटा देने की साजिस चल रही है।
हमारे नाम तक बस आँधियां है।।

–पांडेय आशुतोष

नवगीत

दुख रही है अब नदी की देह
बादल लौट आ।
छू लिये हैं पाँव संझा के
सीपियों ने खोल अपने पंख
होंठ तक पहुँचे हुए अनुबंध के
सौंप गले कई उजले शंख
हो गया है इन्तजार विदेह
बादल लौट आ।

बहा चली हैं बैंगनी नदियाँ
खोलकर कत्थई हवा के पाल
लिखे गेरू से नयन के गीत
छुपे कोपल पर सुरभि के हाल
खेत की पतले हुए हैं रहे
बादल लौट आ।

फूलते पीले पलासों में
कांपते हैं खुशबुओं के पाँव
रुकी धारों में कई दिन से
हौसले से कागजों की नाव
उगरहा है मौसमी सन्देह
बदल लौट आ।

–डा. शांति सुमन

जोंक

रे बुरवक भकोल,
कान दूनू खोल।
काहे छट-पटा ताड़े
तुरा के जेंवर कहवा ते ताताड़े।
तोरा सोराज चाहीं?
तऽ हम कइसे जीयब,
आखिर जोंक के नात हईं,
खून केकर पीयब?
आज काहे छट-पटा ताण्डे,
ते चरेले,
आ खून खे,
हमार पेट भरे ले।
केकरा से, सुनावे खातिर,
पीट ताड़े ढोल।
रे बुरबक भकोल......।
एही हिरात के आजाद करे खातिर,
तोर खान-दान खून बहवलस।
ऊ का बुरवक रहे–
कि, हमरा बाप-दादा के अगुआ बनवलस।
गोरका जोंक से ओकरा नफरत रहे,
करिका से नाही।
काऽ ते हमरा के उहे समझतारे?
उतऽ उजर, चानी जइसन पानी–
हमार ओहार ह,
वरहऽ कपड़ा हऽ दूआर हऽ।
विश्वास नइखे तऽ।
नियरे से अईक,
आ धीरे से बोल।
रे बुरवक भकोल॥

–मिथिलेश उपाध्याय

पन्द्रह अगस्त

आजादी का दिन यू मनायें
आओ खुशी में झूमे गायें
　　प्यारी-प्यारी ये आजादी
　　आज के दिन हो हमको मिली थी
क्यों न इसकी याद मनाये
आयो खुशीये झुमे गायें
　　खत्म हुई मंहूस गुलामी
　　हो गए हम दुनिया येनामी
आजादी कि शान बढ़ाये
आओ खुशी से झुमे गाये
　　पन्द्रह अगस्त आया है संवर के
　　खुशीयों से अपना दामन भर के
हम भी खुशीयाँ लुटे लुटाए
आओ खुशु ने झूमे गाये।

मकसद की बात करों

कौन है
क्या चाहती हो
मैं बहुत मुसिबत जदाह हूँ
दो रोज कि भूकि हूँ
मदद चाहती हूँ।
मदद चाहती हो।
यहाँ कोई किसी कि मदद नहीं करता
सब अपने-अपने मकसद कि बात करते है
अन्दर आ जाओ
मैं भी भूका हूँ।

—असरफरीदी,

एकता बिहान दे।

कंठ देशगान दे,
भाल स्वाभिमान दे।
भेद-तुम को चीरती,
एकता बिहान दे।।

बन्धुता सुदीप हो,
अन्धकार-नाश हो।
हो हरेक कन-रतन,
कान्ति हो, प्रकाश हो।।

कीर्ति छू नए शिखर
भूति, आन-वान दे।
भेद-तम को चीरती,
एकता बिहान दे।।

राष्ट्र की शुभैषिता,
प्राण-गीत-राग हो।
मातृभूमि की पवित्र
धूलि, स्वर्ण-पाग हो।।

शाम यमन, भैरवी,
भोर आसमान दे।
भेद-तम को चीरती,
एकता बिहान दे।।

रात चाँदनी खिले,
तिन भरा, उजास हो।
एक-एक पुष्प में,
फागुनी विलास हो।।

देश की दिशा-दिशा,
पंथ शुभ अजान दे।
भेद-तम को चीरती,
एकता बिहान दे।।

कोटि कंठ फिर जगें,
कोटि मंत्र फिर जगें।
कोटि-कोटि वरसुजन,
कोटि छंद फिर जगें।।

आज, तार-तार फिर,
सामगान-मान दे।
भेद-तम को चीरती,
एकता बिहान दे।।

—अखिलेश्वर नाथ त्रिपाठी

राष्ट्रीय एकता एवं साम्प्रदायिक सौहार्द को समर्पित

वतन का इस्तेहाद हमको जान से अज़ीज है।
यह शै है इतनी कीमती जो दिल से भी करीब है!
वतन के इस्तेहाद को कभी नहीं भुलायगें!
कदम हमारे सख्त है ज़रा न डगमगायेंगे!
जो रोकता है रोक ले हम आगे आगे बढ़ते जायेंगे
वतन का इस्तेहाद हमको जान से अज़ीज है
यह शै हैं इतनी कीमती जो दिल से भी करीब है
है अपनी जात सिर्फ एक और वह है 'भारती'!
हम इरतकां के वास्ते बने हुये है सारथी!!
तरक्कियाँ बलाये लेगीं और करेंगी आरती!!!
वतन का इस्तेहाद हमको जान से अज़ीज है
यह शै है इतनी कीमती जो दिल से भी करीब है।
रवायते यह कह रही है एक अनूठी शान से!
हम कामयाब हो चुके हैं सारे इन्तहान से!!
कूदरतें, अदावतें मिटाओ दरयमान से!!!
वतन का इस्तेहाद हमको जान से अजीज है
यह शै है इतनी कीमती जो दिल से भी करीब है
इलाके और जुबान का यह झगड़ा सब फिजूल है।
हमारे खाम जेहन की यह एक सुनहरी भूल है।
कहो कि हम हैं एक और एक ही उसूल है!!!
वतन का इस्तेहाद हमको जान से अजीज है
यह शै है इतनी कीमती जो दिल से भी करीब है।
ना घर ही हमको चाहिये न तो जमीन चाहिये!
ना खुशगवार मौसमों की रूत हसीन चाहिये!!
हमें हर एक सिमत से बस यह यकीन चाहिये!!!
वतन का इस्तेहाद हमको जान से अजीज है
यह शै है इसनी कीमती जो किग से नीख है।

शकील अहमद मोईन

गजल

गिरजा नहीं देखे के शिवाले नहीं देखे ःतुम जैसे मगर चाहने वाले नहीं देखे
इस जलते हुए शहर का क्या हाल बताएंःबच्चों ने कई दिन से उजाले नहीं देखे
खुद अपनी शिकायत पर ही हो जाओगे नादिमःतुम ने तो अभी पाँव के छाले नहीं देखे
कहता है वही शख्स सियासत को बुरी चीजःजिसने कभी सोने के नेवाले नहीं देखे
बच्चों पे किए बार तो अबलाओं को लूटाःआँखों ने मेरी तुम से जेयाले नहीं देखे

गजल

चाँद तारे तोड़ लाना क्या भला दुशवार था
बस तुम्हारा एक इशारा ही मुझे दरकार था,

आजकल उसके बदन पर है सियासत की कबा
कल तलक जो शहर का सबसे बड़ा दिंदार था

मुझ सा दिवाना कहाँ रुकता फसिले शहर से
वाँ जुलेखा थी न कोई मिस्र का बाजार था।

आसमां तुझ से मुझे कोई शिकायत ही नहीं,
मेरा गम उसकी अता है जो मेरा गमखार था।

हासिदों के शहर में भी मुतमइन था वह कसीम
मुनहेनी सा आदमी लेकिन बड़ा जीदार था।

कसीम अख्तर

मुक्तक

(१)

क्या पूछते हो तंज़ो ज़राफत का हाल 'तंग'
मैं भी अदब के पेड़ का लंगूर हो गया ।
रोते रहे हैं लोग यहाँ पेट के लिये,
मैं क़हाक़हा लगाने पे मजबूर हो गया ॥

(२)

वफ़ादारी निभाने में अदाकारी नहीं करता
वो अहमक़ है जो ग़द्दारों से ग़द्दारी नहीं करता ।
वफ़ादारी का ये आलम कि सब कुत्ता समझते हैं,
यही सब सोचकर मैं भी वफ़ादारी नहीं करता ॥

(३)

जिस गेट पर लिखा हुआ रहता था ये बयान ।
मेहमान मेरा होता है भगवान के समान ॥
लेकिन तरक्क़ियाते ज़माता तो देखिये ।
उस गेट पर लिखा है कि कुत्ते से सावधान ।

(४)

मज़ा उस वक्त तक लूटेंगे कुर्सी का सेयासत में,
कि जब तक अक़्ल के अंधे हमारे दरम्याँ होंगे ॥
ख़बर कर दो ये शेषन को एलेक्शन में वही होगा ,
लीये तस्वीर बेगम की नक़ाब ओढ़े मियाँ होंगे ॥

—तंग इनायतपुरी

गज़ल

हरा है ज़ख्म तो इसका मलाल मत करना
अमीरे शहर से लेकिन सवाल मत करना
तु बात मान सही यह कमाल मत करना
कभी ज़मीर की चिड़या हलाल मत करना
ज़बान काट ली जाएगी रस्म ऐसी है
इसी में खैर है कोई सवाल मत करना
ज़मीन काम ना देगी कोई ना पुछेगा
यहाँ जोनूब को भाई शुमाल मत करना
तेरी जबाँ से अदा हों सके बहक शाहिद
किसी के नाम का इतना ख्याल मत करना ।

—शाहिद